महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता पूर्व भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृति, ज्ञान परंपरा एवं साइबर सुरक्षा पर हुई संगोष्ठी

भारतीय विश्वविद्यालयों ने संस्कृति और ज्ञान परंपरा को देश-दुनिया में ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया : प्रो. सिंह

वर्धा, 16 अगस्त 2024 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता पूर्व भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृति, ज्ञान परंपरा एवं साइबर सुरक्षा विषय पर शुक्रवार, 16 अगस्त को महादेवी वर्मा सभागार में आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता पूर्व स्थापित भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को देश और दुनिया में ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज के समय में हमें अपनी समृद्ध संस्कृति और ज्ञान परंपरा को विस्तारित करने में कृतसंकल्प होने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर स्वतंत्रता पूर्व भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृति, ज्ञान परंपरा विषय पर वक्ता के रूप डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर सिद्दो कान्हू

मुर्मू दलित एवं जनजातीय अध्ययन केंद्र के प्रभारी एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. बालाजी चिरडे, दर्शन एवं संस्कृति विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय, दूर शिक्षा निदेशालय के अनुसंधान अधिकारी डॉ. परिमल प्रियदर्शी एवं दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने संबोधित किया। डॉ. जयंत उपाध्याय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय पर आधारित अपने वक्तव्य में विश्वविद्यालय के बनने की रोचक प्रक्रिया से लेकर उपलब्धियों एवं महत्ता पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के पूर्व स्थापित इस विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जिन विषयों का जिक्र किया गया है, वह विषय काशी हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाते रहे हैं। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों का पं. मदन मोहन मालवीय ने प्रस्तुत किया था, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पूनर्पाठ है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय का भारत को विश्वगुरु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

डॉ. बालाजी चिरडे ने बॉम्बे विश्वविद्यालय यानी मुंबई विश्वविद्यालय पर केंद्रित अपने संबोधन में कहा कि 18 जुलाई 1857 को इस विश्वविद्यालय की स्थापना लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर हुई। पहले यह संलग्न था बाद में यह स्वायत्त विश्वविद्यालय के रूप में काम करने लगा। बाद के दिनों में मद्रास और कोलकाता विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी। इन विश्वविद्यालयों में भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास जैसे महत्वपूर्ण विषयों का अध्ययन अध्यापन होता रहा है। उन्होंने देश के विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता को उद्धृत करते हुए देश के बाहर जा रही प्रतिभा को रोकने के लिए उपाय योजना करने की आवश्यकता जताई।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

डॉ. परिमल प्रियदर्शी ने पटना विश्वविद्यालय पर केंद्रित अपने उद्बोधन में कहा कि 1 अक्टूबर 1917 में स्थापित पटना विश्वविद्यालय का भारतीय ज्ञान, परंपरा, धर्म और व्यापार को दक्षिण पूर्व एशिया तक प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि संस्कृति को बढ़ाने में सनातन और बौद्ध धर्म का योगदान रहा है। डॉ. सूर्यप्रकाश पाण्डेय ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर केंद्रित अपने वक्तव्य में कहा कि उत्तर प्रदेश का यह पहला विश्वविद्यालय है जहां से अनेक शिक्षाविद, साहित्यकार और इतिहासकारों ने देश सेवा और राष्ट्र निर्माण अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संगोष्ठी में साइबर सुरक्षा पर चर्चा की गई जिसमें भाषा प्रौद्योगिकी एवं भाषा अभियांत्रिकी विभाग की डॉ. हर्षलता पेटकर एवंलीला विभाग के डॉ. गिरीश चंद्र पाण्डेय ने संबोधित किया। डॉ. पेटकर ने कहा कि साइबर के इस युग में हम सभी साइबर नागरिक बन गये हैं। उन्होंने

प्रौद्योगिकी कानून 2000 का जिक्र करते हुए साइबर हमले को रोकने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। डॉ. गिरीश पाण्डेय ने कहा कि सजग और सावधान रहकर ही साइबर धोखाधडी और साइबर हमले से बचा जा सकता है। उन्होंने साइबर सुरक्षा के लिए किए जा रहे उपायों की भी चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सीमा बर्गट ने किया तथा जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने आभार माना। इस अवसर पर डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. मनोज राय, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. विपीन कुमार पाण्डेय, डॉ. शैलेश कदम, डॉ. संदीप सपकाले, डॉ. मुन्नालाल गुप्त डॉ. वरूण कुमार उपाध्याय, डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. रणंजय कुमार सिंह अभिषेक सिंह, जीतेंद्र, विकास मिश्रा, धर्मराज सिंह, करन वीर, अश्वनी कुमार मौर्य, अम्बुज कुमार शुक्ल, प्रिंस कुमार, सुमीत कुमार गुप्ता, राम कुमार सिंह, गौरव, वैभव तिवारी, शिवानी उपाध्याय, अंकित सिंह ओम प्रकाश बौद्ध, संदीप शुक्ल, महेश कुमार शुक्ल, प्रथमेश तिवारी, आशीष पाण्डेय, दिग्विजय मिश्र आदि सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

हिंदी विश्वविद्यालयात स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय विश्वविद्यालयातील संस्कृती, ज्ञान परंमरा आणि सायबर सुरक्षा विषयावर चर्चासत्र

संस्कृती व ज्ञान परंपरेला विस्तार देण्यात विद्यापीठांची महत्वाची भूमिका : प्रो. सिंह

वर्धा, 16 ऑगस्ट 2024: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय विश्वविद्यालयातील संस्कृती, ज्ञान परंपरा आणि सायबर सुरक्षा या विषयावर शुक्रवार, 16 ऑगस्ट रोजी महादेवी वर्मा सभागृहात आयोजित चर्चासत्राचे अध्यक्ष म्हणून बोलतांनाकुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह म्हणाले की स्वातंत्र्यापूर्वीकाळात स्थापित भारतीय विश्वविद्यालयांची भारतीय संस्कृती आणि ज्ञान परंपरेला देश आणि जगात नेण्यात महत्त्वाचे योगदान दिले आहे. आजच्या काळात आपली समृद्ध संस्कृती आणि ज्ञान परंपरेचा विस्तार करण्याची आवश्यकता आहे.

यावेळी स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय विश्वविद्यालयातील संस्कृती, ज्ञान परंपरा या विषयावर वक्ता म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर दलित व जनजातीय अध्ययन केंद्राचे प्रभारी असोशिएट प्रोफेसर डॉ. बालाजी चिरडे, दर्शन आणि संस्कृती विभागाचे असोशिएट प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय, दूर शिक्षा निदेशालयाचे अनुसंधान अधिकारी डॉ. परिमल प्रियदर्शी आणि दर्शन आणि संस्कृती विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्यप्रकाश पांडे यांनी भाषण केले. डॉ. जयंत उपाध्याय यांनी काशी हिंदूविश्वविद्यालयावर आधारित व्याख्यानात विश्वविद्यालयाच्या निर्मितीची रंजक प्रक्रिया, उपलब्धी आणि महत्त्व याविषयी तपशीलवार प्रकाश टाकला. ते म्हणाले की राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 मध्ये ज्या विषयांचा उल्लेख करण्यात आला आहे, ते काशी हिंदू विश्वविद्यालयात शिकवले जात आहेत. पं मदन मोहन मालवीय यांनी मांडलेली विश्वविद्यालयाची उद्दिष्टे ही राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचा पुनरुच्चार होय. असेही ते म्हणाले.

डॉ. बालाजी चिरडे यांनी बॉम्बे युनिव्हर्सिटी म्हणजेच मुंबई विश्वविद्यालयावर केंद्रित भाषणात सांगितले की, लंडन विश्वविद्यालयाच्या धर्तीवर या विश्वविद्यालयाची स्थापना १८ जुलै १८५७ रोजी झाली. पूर्वी ते संलग्न होते नंतर ते स्वायत्त विश्वविद्यालय म्हणून काम करू लागले. पुढे मद्रास आणि कोलकाता विश्वविद्यालये स्थापन झाली. या विश्वविद्यालयामध्ये भारतीय संस्कृती, भारतीय ज्ञान परंपरा आणि इतिहास असे महत्त्वाचे विषय शिकवले जातात. डॉ. परिमल प्रियदर्शी यांनी पाटणा विश्वविद्यालया विषयी सांगितले की, 1 ऑक्टोबर 1917 रोजी स्थापन झालेल्या पाटणा विश्वविद्यालयाने दक्षिण पूर्व आशियामध्ये भारतीय ज्ञान, परंपरा, धर्म आणि व्यवसायाचा प्रसार करण्यात महत्त्वपूर्ण योगदान दिले आहे. सनातन आणि बौद्ध धर्माने संस्कृती वाढविण्यात योगदान दिले आहे. डॉ. सूर्यप्रकाश पांडे यांनी अलाहाबाद विश्वविद्यालया विषयी सांगितले की, उत्तर प्रदेशातील हे पहिले विश्वविद्यालय आहे की, जिथून अनेक शिक्षणतज्ज्ञ, साहित्यिक आणि इतिहासकारांनी देश आणि राष्ट्र उभारणीसाठी महत्त्वपूर्ण योगदान दिले आहे.

परिसंवादाचे दुसरे सत्र सायबर सुरक्षेवर आधारित होते त्यात भाषा तंत्रज्ञान आणि भाषा अभियांत्रिकी विभागाच्या डॉ. हर्षलता पेटकर आणि लीला विभागाचे डॉ. गिरीशचंद्र पांडे यांनी संबोधित केले. डॉ.पेटकर म्हणाल्या की, सायबरच्या या युगात आपण सर्वजण सायबर नागरिक झालो आहोत. तंत्रज्ञान कायदा 2000 चा संदर्भ देत त्यांनी सायबर हल्ले रोखण्यासाठी सरकारकडून करण्यात येत असलेल्या प्रयत्नांची माहिती दिली. डॉ. गिरीश पांडे म्हणाले की सावध राहून सायबर फसवणूक आणि सायबर हल्ले टाळता येतात. सायबर सुरक्षेसाठी करण्यात येत असलेल्या उपाययोजनांबाबतही त्यांनी चर्चा केली. कार्यक्रमाचे संचालन शिक्षा विभागाच्या सहायक प्रोफेसर डॉ. सीमा बर्गट यांनी केले तर जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे यांनी आभार मानले. या प्रसंगी डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. मनोज राय, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. विपीन कुमार पाण्डेय, डॉ. शैलेश कदम, डॉ. संदीप सपकाले, डॉ. मुन्नालाल गुप्त डॉ. वरूण कुमार उपाध्याय, डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. रणंजय कुमार सिंह, अभिषेक सिंह, जीतेंद्र, विकास मिश्रा, धर्मराज सिंह, करन वीर, अश्वनी कुमार मौर्य, अम्बुज कुमार शुक्ल, प्रिंस कुमार, सुमीत कुमार गुप्ता, राम कुमार सिंह, गौरव, वैभव तिवारी, शिवानी उपाध्याय, अंकित सिंह, ओम प्रकाश बौद्ध, संदिप शुक्ल, महेश कुमार शुक्ल, प्रथमेश तिवारी, आशीष पाण्डेय, दिग्वीजय मिश्र यांच्या सह मोठ्या संख्येने शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305